

DPNS627

Title :

१. कृष्णाजुन सम्वाद
२. विभिन्न म्ये

1. KRṢṢNĀJUNA SAMBADA
2. VIBHINNA MYE

Run. No. 6318

Cat. No.

Micro. No.

Subject ^{Philosophy:} Conversation | २ long
सम्वाद के मे

Religion : Hindu / Baudha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt. - New. / Maith. - New. / New. - Nep. /

नेपाली भाषा (कृष्णाजुन सम्वाद)
nepali meaning (krṣṣṇājuna sambada)

Size in cms. 17 X 7.5

Folios 16

Lines (in a page) 5/6

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS 1897

Ruler / place गीर्वाण युद्ध माहौल

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thyaṣaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

Remainder / टिप्पणी

युकी दुष्प्रभाव नष्ट भाषा मेधा ६ र्चिस् / Titles of new songs

1. जम कलिका नग पालिका

2. मरिचु पदक

3. आगत पंच दि मंग चर्च (हिन्दी)

4. हेला -

15

10

5

0

CMTS.

5

10

15

20

25



15

10

5

0

CMTS.

5

10

15

20

25



स २
स्वस्ति श्री गणेशाय नमो ॥ श्री श्री जन्म गीता लि
०००० पे ते ॥ श्री जन्म जय ५ वा व ॥

॥ राग ॥ मालसि ॥ ताल बज ति ॥ इ प्र कालि कान ग वा
लि का कूल पा ल ज ग त ड धा ल ॥ १ ॥ व व वू पा य
ल मा ह ल स लिल स श स न धू कू गू लि सा ल भ

ई ल व हे ॥ माल पा म त्र क स क झ ठ क ल न स
मा ति पा य ल स क पा ड ल ज प्र ॥ १ ॥ ग ल स न
ल कूल ग ज पा ड स क स हा ल ल ल म ति वि न
ने ज प्र ॥ ख र्ग र्ग र्ग र्ग नः स हि न द वू द वू ग ल स
ध का ला हा ति न ल ज प्र ॥ २ ॥ नू ग ल कु ति म ति
थ पा ड पा ति कु ति कू ल पि न क तू ति न रे ज प्र ॥

लकविजपवतल देख्या जो भन मां काहि ह
तिनल जप ॥३॥ यातिन भयंकल मूर्ति अस
क्या तया अकुलित साहाहा नरे जप ॥ ह प
दि द्रयामन सतन मसतन मभा अह ग
तन ध्यान लजप ॥ जप कालिका नय कालिका
बलया तज गत उ धाल रे जप हे ॥५॥ शु ३॥

मनि कुर परवत । श्रीवरत जुगिनि दोर
गिरत । श्रीगुरुनाथन । कुक्षि निरकंथ
गोककं ईश्वरि । इतामा जुवा गुनारं वीथ
दरि दरि संखरं । निरकंथ ज्ञाई । निपारया
कल्युपति । श्रीशारिमाई । दरिखिव संखरं
कंथ ज्ञाई

लक्ष्मीजय मंगल
के

रखा ने हि गुरि मि खान परे ह। वि क हरि व न सौ या
 इर सारि माई व न ते। म नु क क से त या हे ना म सी ज
 न नी आ मा म नी न नी थि क ॥ २ सि धी नी बा धी
 थ व थ स त या व न स न वि ज्ञा क इ स ली व न
 सौ जी नी मा यी ख ग व य नी दं व न थि मा
 थ दा व न स न वि ज्ञा क इ स ली व न नी नौ नि नी

म नि मार को खा वि क डि न सौ जी रि मु भ न थार नी

रा गे वा लो व न ली ॥ प्र ग म पं थ कि प्रं त का ई ॥ का ला से त मु म्मा ई ॥
 थ कि त भ यो संध र क ला। कृ मा ग न को म्मा ई ॥ प्रति सर व संध
 र का ला को ला से त मु म्मा ई ॥ १ ॥ न नि ५ रि थो ना गि नी क डु मा ग न ई ॥
 तु मा रि दा न ला मु न नि ले हे और का म्मा ई ॥ प्रति ॥ २ ॥ का ला तु
 मा रो न न न म भु मि ॥ का ला तु मा रो म्मा ई ॥ कृ ला तु म रो जा न नं सि

कौने काम सग्राई ॥ अति ॥ ३ ॥ गो. कुरहा मारो जन म भुमी त स्व दा
त मारोई ॥ जात तमा देव वंशि कवर तोरन ग्राई ॥ अती ॥ कवर फुरको
न तो उ ना उ तोरन का हाये पाई ॥ त वनाग जागे हो ये तोनी ये त मुखा
ई ॥ अति ॥ वहुत वात न करो नागिनि त मुको प्रंतन पाई ॥ दु
त भुत त मु सो षे हे ॥ त मु को ये पाई ॥ अति ॥ ६ ॥ वहुत वात न क
रो बाला नाग कि त गुर ग्राई ॥ त वनाग जागे हो तोनी ये त मु को
पाई ॥ अति ॥ वहुत वात न करो नागिनि नाग देव उ था यी ॥ ॥

त वनाग जागे हो ये तो सिर कि कवर तोरन जाई ॥ अति ॥ ६ ॥ वि
नति करो हो सुंदर वाला तु मारा पाउ सग्राई ॥ सिर कि कवर
तो रि दे तो नाग मो दि जाई ॥ अति ॥ वहुत वात न करो नागि
नि नाग देव उ था यी ॥ मो दि जाय तो जान दे तो तामु को
बलाई ॥ अति ॥ ११ ॥ जरल कवर वहुत होई ख हिले को
जायी ॥ त मु तो दि यो उ पर ॥ दे स व हु र दु कार जाई ॥ अति ॥
जरल कवर को ने काम कौने का र्ज लाई ॥ अ सु मे र त जे

करे तो कंससिरकि कवलवाति ॥ १२ ॥ कीतमु जा जनु नाग
जानु नागदे उ थायि उ थ उ थ कालीनागतु मारि नोरिआई ॥ १३ ॥
जवनागता जे होयतो बहत कोपवदाई ॥ पाउ ता ते गुति
केसिरति वदाई ॥ १४ ॥ समु ज ते रोमाई वापसमु ज ते रो भाई ॥
समु जो ते रोई तमि त कालि नाग लेखाई ॥ १५ ॥ नहि समु जे
मई वाप नही समु जे भायी ॥ य को समु जे गरुद्विर का

ली नागषाई ॥ १६ ॥ प्रयोविर गरुध जो दा ता पक्र नागलाई ॥
करवरकि हुनतिदि यो नै तोषामि ॥ १७ ॥ कारि नागगती के
उ दा यो प्रकास मा ॥ कंस धरम थुरान गरुद्विर पतवाई ॥
॥ १८ ॥ नाग देखिदरि यो कंस पु कान्यो कुललाई ॥ कंस मारि
नाग पे कि मथुरा सुख जाई ॥ १९ ॥ प्रती सरप सेंदर वाता
का लायेत मु आई ॥ २० ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥

१५
१०
७
०
५
१०
१५
२०
२५
३०
३५
४०
४५
५०
५५
६०
६५
७०
७५
८०
८५
९०
९५
१००
१०५
११०
११५
१२०
१२५
१३०
१३५
१४०
१४५
१५०
१५५
१६०
१६५
१७०
१७५
१८०
१८५
१९०
१९५
२००
२०५
२१०
२१५
२२०
२२५
२३०
२३५
२४०
२४५
२५०
२५५
२६०
२६५
२७०
२७५
२८०
२८५
२९०
२९५
३००
३०५
३१०
३१५
३२०
३२५
३३०
३३५
३४०
३४५
३५०
३५५
३६०
३६५
३७०
३७५
३८०
३८५
३९०
३९५
४००
४०५
४१०
४१५
४२०
४२५
४३०
४३५
४४०
४४५
४५०
४५५
४६०
४६५
४७०
४७५
४८०
४८५
४९०
४९५
५००
५०५
५१०
५१५
५२०
५२५
५३०
५३५
५४०
५४५
५५०
५५५
५६०
५६५
५७०
५७५
५८०
५८५
५९०
५९५
६००
६०५
६१०
६१५
६२०
६२५
६३०
६३५
६४०
६४५
६५०
६५५
६६०
६६५
६७०
६७५
६८०
६८५
६९०
६९५
७००
७०५
७१०
७१५
७२०
७२५
७३०
७३५
७४०
७४५
७५०
७५५
७६०
७६५
७७०
७७५
७८०
७८५
७९०
७९५
८००
८०५
८१०
८१५
८२०
८२५
८३०
८३५
८४०
८४५
८५०
८५५
८६०
८६५
८७०
८७५
८८०
८८५
८९०
८९५
९००
९०५
९१०
९१५
९२०
९२५
९३०
९३५
९४०
९४५
९५०
९५५
९६०
९६५
९७०
९७५
९८०
९८५
९९०
९९५
१०००

ॐ राग संत ॥ ते राम कैसे काया गन पति ॥ पर नाम या ज ॥ न व नाथे स्व
रं गुरुवर सन याये ॥ करं खाया है सदई ॥ व आमि साहाये ॥ व
मखु ई उपासा ॥ थोषा जिन जाय ॥ २ ॥ गरिब या थो रुग संक मा
ई न हुआ या ॥ घर सार सखा थम विवा ता रु याय ॥ ३ ॥ ज आ पंच मु
ज को थाय न म स्कार याय ॥ वं व ला आ मनु खे व विसास मया य
॥ ४ ॥ इनु व नु म ये या ता पाप माने हाय न गं न थ दर सन ग
ना ज ला ये ॥ ५ ॥ ज गरि या विर धाय न तारि या काये जे ने म दुख

ये द व थो रु ग या थाय ॥ ६ ॥ तरा स वा या न हाय वि र ज नि या ये
॥ थ म व ने जे कु ल स कृ स्न रु या थाये ॥ ७ ॥ दु सर थ रा ता या की र
विर का ये ॥ वं ने रा ज र हा मन राम को व या ये ॥ ८ ॥ न ये ती य थि र
म दु स्रा व ग थें या ये ॥ तरा स वा या न हाय वि र ज नि या ये ॥ ९ ॥
थ व क ति ला के या त व न ज नि या ये ॥ द को लोक या ये स्या हा थ
ता र व को ये ॥ १० ॥ वं धा का कां न ये मालि म नि कार धा ये ॥ न ये
म दु थें संप ति मा या जि ता हा ये ॥ ११ ॥ पर लोक व ने या ता सा थ

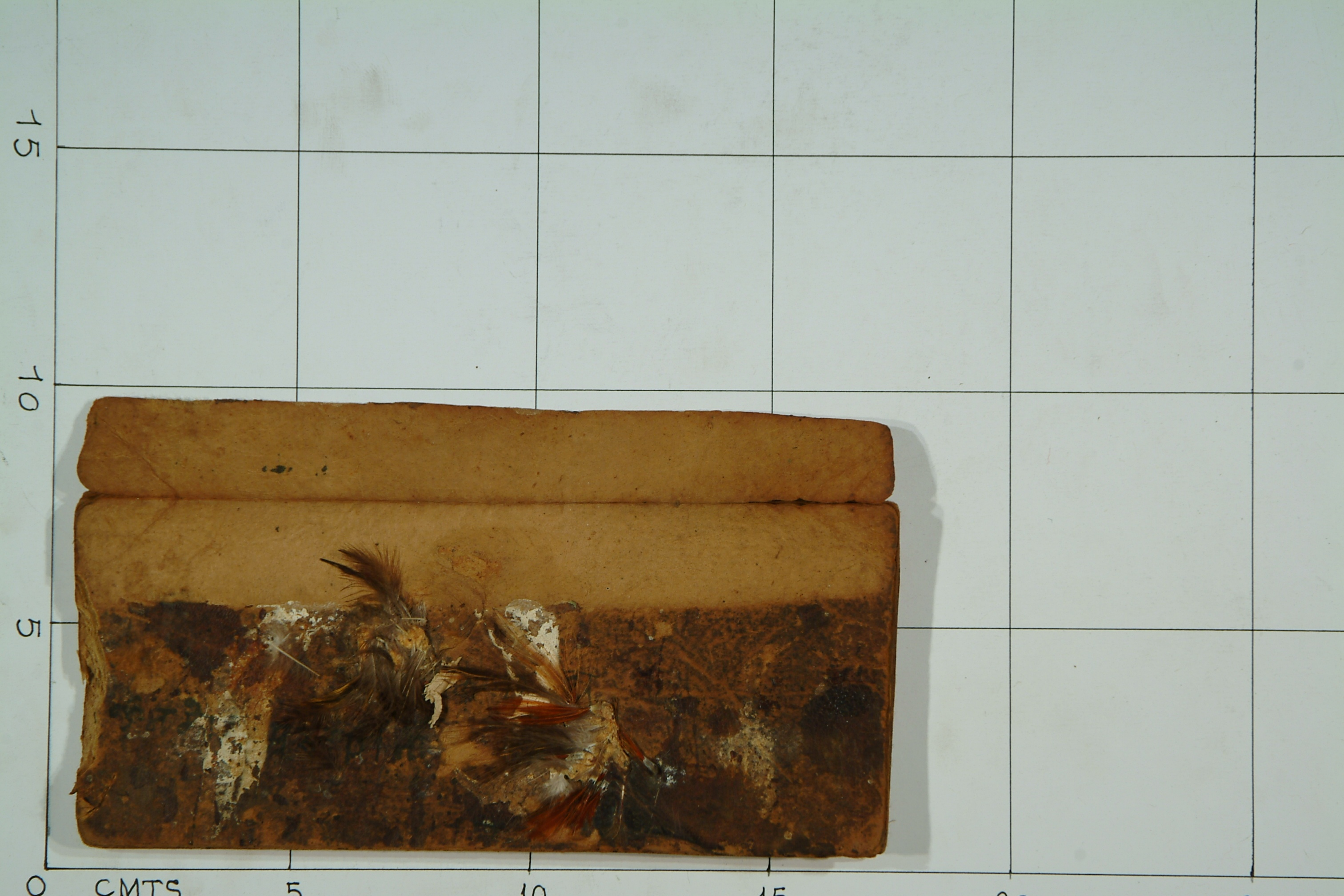
संग द्वाये ॥ फल लेनि थोजि तं धरमनि याये ॥ १२ ॥ वसंत या
समये सं ॥ मन सुताप भमर को किल जालि गये स ह याये ॥
॥ ३ ॥ मलाव ने तो हो विना स तं न पालाये ॥ यथा ये रुया आरुहि
व गवे वाये ॥ १४ ॥ रसिक ल्या सो वा तो नैला नैला स ये थि थि थ
र स से थ मर सरंग याये ॥ १५ ॥ वने मालि ठ पत स तन्म या गु
था ये ॥ स दाम दु थो संसार वो ने उ गु थाये ॥ खाहि द तो मा म

व कु दर स न याये ॥ ससति से बल प्राव गये याये ॥ १७ ॥ हरष
न न मुणा स प्र नान याये ॥ हे सम दु वन न ए निं दु धरम याये ॥
॥ वं दि का पुरि या था व दि का या थान श्री ग्री वान मा दा रा ता दर स ए
याये ॥ १८ ॥ सब त १८ २७ सार मिति र मं सिर सु दि १५ रो न ४
प्र वन मं दि र ॥ सु द त सि तर ॥ हे म मं दि र ओ श्री तं ॥ लोक
त गंग ॥ व ह त नि र ॥ व श्री र्द दी ना थ वि सं भ र ॥ से स सु मे

रन ए कतनि सुदिन धरत ध्यान म ते सो रं ॥ श्रीवेदवक्त्रा
करत प्रसुति ॥ श्रीवर्दि ॥ तद् के नर कर कोकितिरं ॥ ग्यान
गं विव प्रगसीतं ॥ सिद्धमुनि ॥ जन करत जै जै ॥ श्रीवर्दि ॥
संगाती ग उराग न्ये ससार धनार धमुनी जन प्रोवरं ॥ जो
ग धा ए मपलालिरा ॥ श्रीवर्दि ॥ उत्तर खंड कैलासपर्वत प्र

हरसितल म ते स्वरं ॥ श्रीरहिमि कवर ववर रदोले ॥
श्रीवर्दि नाथवि संभरं ॥





राम ॥ नमो श्रीनारायणाय नमः ॥ अर्जुनैवाच ॥ केन
 न पापे भवे संधा ॥ के ए पापे दरिद्रता ॥ के ए पापे भ
 ॥ के कृषी ॥ कथं कस्य जनाई नमः ॥ अस्यार्थ ॥ अर्जुनरे
 श्री कृष्ण ॥ ६ ॥ स्वध्या हे कृष्ण ॥ पुर्व जन्मे को पाप पुंन
 को कुराम सं दु भनी अर्जुनरे श्री कृष्ण ॥ ६ ॥ की ती गता ॥
 क्या को पाप ॥ ले सु धर्म भयो ॥ क्या पाप ॥ परे दरिद्र भयो
 ॥ क्या को पाप ॥ रे ए सा धर्म र भयो भनि ॥ अर्जुन न ले ॥

श्री कृष्ण ॥ ६ ॥ स्वध्या ॥ १ ॥ भगवानौवाच ॥ परद्वारे भवे सं
 धा परद्वारे पु दरिद्रता ॥ पुर्व जन्मे भवे कृषी सुन दो पां
 दुनमः ॥ अस्यार्थ ॥ श्री कृष्ण रे सा सी भयो ॥ हे पां दु रा
 ॥ दो रा मै ले क सं दु सु न पुर्व जन्मे मा सर की को पाप सी
 २ ॥ संग रे त्या को पाप ले सं धा भयो ॥ सर की को धन वे त्या
 को पाप रे ॥ दरिद्र भयो ॥ पुर्व जन्मे मा व मि न त्या गत्या

15
को पाप रे कुं ~~कुं~~ भयो भनी। श्री कृष्ण रे अरु न
लोई सुनाया। २। अरु वाव॥ केन पुंन्य र भते तेमं। के रा पुं
न्य गत वा जी कं। केन पुंन्य र भते रा जे। कथं कस्य तन ह
३॥ नमः। अर्थ॥ क्या को पुंन्य रे। सुन प्र न्य क अने कद की
पाये। अरु क्या पुंन्य रे। ताती यो रा गाई भं सिवा क भ
दा पाये॥ क्या पुंन्य ले ग्राम को नायक। उम रा थुलो थुलो

5
भा रा भयो भनी। अरु नले। श्री कृष्ण दा उ अ पा॥ ३॥
श्री कृष्ण वाव॥ तेम दानु त भते तेमं। भुमि दानं गत वा
४॥ जी क मः। अर्थ॥ अत्र दान र भते रा जे। सुन हो पां दु नंद नमः। अस्या
र्थ॥ को हि मनु दो ले पुंन्य नम मा पुन दान गत्या को पुंने
ले स्रवर्न अ न्य कर व वि त वस्तु पाये। भुमि दान रा रा को
पुंन्य ले। ग्राम को नायक भये। ताति यो रा पाये। अत्र दान

15
10
ग म कोपुं न्य ले रा त्प पाये : भनि श्री कृष्ण ले स र्जु न
लाई सुनाया ॥ ४ ॥ स र्जु नौ वाव ॥ के रा पा पे श्री मृ त्तु : के न पा
पा पे पु त्र ना स न म ॥ के रा पा पे भ वे भी ह । क थं क स्य त ना
ई न म ॥ अ स्यार्थ ॥ क्वा को पा प ले स र्जु नौ वाव ॥ क्वा को पा प ले दु षी भ यो :
भनि स र्जु न ले श्री कृष्ण दो ॥ ५ ॥ श्री भ गवानौ

5
वाव ॥ लीन पा पे श्री मृ त्तु : स्था न पा पे पु त्र ना स न म ॥
म रा भ गे भ पे दि नं सु न हो पां दु नं द न म ॥ अ स्यार्थ ॥
फ र्त त म मा स की को लीन न ती ला को पा प रे स र्जु नौ वाव ॥
६ । ना सा श्री मृ त्तु भ यो : सो क शं ता प भ यो : क ता मा स को
पा प ले पु त्र ना स भ यो : स न्न वी रा को पा प ले भी ह क भ
यो : भनि श्री कृष्ण ले स र्जु नौ वाव ॥ के न पुं न्य ले वि की त रे

जु न लाई सुनाया

के रा पं न्य सु पात्र म ॥ केन पुं ने मा ता भो मिणिः क
थं क से न ना र्त्त न म । अर्थ । अ न्तु न ले भ न्याः क्वा
पुं ने ~~के~~ रे वि वी त्र रू प भ योः क्वा पुं न्य ले सु पात्र भ यो
१६ क्वा पुं न्य ले मा ता सु रि भो मिणिः भ यो भ नी प्र र्त्त
न ले श्री कृ ष्ण दा उ त्प प्पा ॥६॥ म श्री कृ नो वर ॥

मि र सा न दा न्य वि वि त्र ये । उा दा ने सु त्र क म । र्त्त
का दा न्य स दा भो मिः सु रा ता ~~का~~ पां दु न । द न म । अ
१७ सार्थ ॥ सम सा दा न ग य के पुं ने ले वि वी त्र रू प भ यो ॥
उा दा ने ग य के पुं ने ले सु पात्र भ यो । स र्त्त र्त्त
त दा न ग य के पुं न्य ले मा ता सु रि भो मिणिः भ यो

भनि श्री कृष्ण ले प्रार्थन लाई शु नाया ॥ ८ ॥ प्रार्थनौ वाव
केश पापे नर्कः जी तीः केन पापे प्र पुत्र म ॥ केश पा
सदा रोगिः कथं क मृत्त न इन म ॥ प्र स्या र्थ ॥ हे परम
॥ ८ ॥ श्री कृष्णः कृपा पाप ले नर क वा श होलाः कृपा
पले पुत्र न ॥ अ प्र पु ता भ योः कृपा पाप ले सदा कारं रोगि
भि भ यो भ नि श्री कृष्ण क्ष ७ वि ती ग य ॥ ८ ॥ श्री भ ज

॥ वानौ वाव ॥ कं न्या न न ग र्द ती वं अ दो ख स पुत्र क मः
देव नि द्रा भ वे रोगिः स हो पां द न द न म ॥ प्र स्या र्थ ॥
हे पां दुरा जा का दो रा कृपा प्र थ ले न यो नो न्या कं न्या
वि ध सि त दा न ग र्द ती वं अ दो ख स पुत्र क मः
॥ १० ॥ वं अ न ला ई दो हो ग य ॥ कृपा पाप ले पुत्र न ॥ अ प्र पु
ता भ योः देव नि द्रा ग य कृपा पाप ले सदा कारं रोगि

१५
१०
५
०
५
१०
१५
२०
२५
३०
३५
४०
४५
५०
५५
६०
६५
७०
७५
८०
८५
९०
९५
१००
१०५
११०
११५
१२०
१२५
१३०
१३५
१४०
१४५
१५०
१५५
१६०
१६५
१७०
१७५
१८०
१८५
१९०
१९५
२००
२०५
२१०
२१५
२२०
२२५
२३०
२३५
२४०
२४५
२५०
२५५
२६०
२६५
२७०
२७५
२८०
२८५
२९०
२९५
३००
३०५
३१०
३१५
३२०
३२५
३३०
३३५
३४०
३४५
३५०
३५५
३६०
३६५
३७०
३७५
३८०
३८५
३९०
३९५
४००
४०५
४१०
४१५
४२०
४२५
४३०
४३५
४४०
४४५
४५०
४५५
४६०
४६५
४७०
४७५
४८०
४८५
४९०
४९५
५००
५०५
५१०
५१५
५२०
५२५
५३०
५३५
५४०
५४५
५५०
५५५
५६०
५६५
५७०
५७५
५८०
५८५
५९०
५९५
६००
६०५
६१०
६१५
६२०
६२५
६३०
६३५
६४०
६४५
६५०
६५५
६६०
६६५
६७०
६७५
६८०
६८५
६९०
६९५
७००
७०५
७१०
७१५
७२०
७२५
७३०
७३५
७४०
७४५
७५०
७५५
७६०
७६५
७७०
७७५
७८०
७८५
७९०
७९५
८००
८०५
८१०
८१५
८२०
८२५
८३०
८३५
८४०
८४५
८५०
८५५
८६०
८६५
८७०
८७५
८८०
८८५
८९०
८९५
९००
९०५
९१०
९१५
९२०
९२५
९३०
९३५
९४०
९४५
९५०
९५५
९६०
९६५
९७०
९७५
९८०
९८५
९९०
९९५
१०००

॥ ५ ॥ भयो ॥ भनी श्री कृष्ण ले पांदुराजोई ॥ सुनाया ॥ १० ॥
"मृर्द्धनौ वाव ॥ केरा पापे भवे काहु ॥ केन पापे न स्वा
न कम ॥ केन पापे न जं भु कम ॥ सुन हो पांदु नंदनम ॥
मृस्यार्थ ॥ हे पांदु पुत्र विनामंत्र ले सुरापान खाया को पा
प ले व हला भयो ॥ वा स्या स्व स्त्री सित गमन गृह को
पाप ले स्वान ज मु भयो ॥ प्राफना मनमा ॥ मृस्युध दान ग

॥ ११ ॥ य को पाप ले जं भु भयो भनी श्री कृष्ण ले मृर्द्धन लाई
सुनाया ॥ १२ ॥ मृर्द्धनौ वाव ॥ केरा पुंने र भ ते वि ध्या ॥ के
रा पुंनु ध ना धो कंम ॥ केरा पुंने र भ ते रा जों ॥ कथं क से
ज ना रुंनम ॥ मृस्यार्थ ॥ क्यारा पुंनु ले पंडित भयो ॥ भनी
मृर्द्धन ले श्री कृष्ण अ ७ ध्या ॥ १३ ॥ श्री भगवानौ वाव ॥ प
र्व ज मु भवत् वि ध्या होम ज त ध ना ध्या कम ॥ वा नार सी

भयमृत्यु॥ सुन हो पादुनंदनं॥ अर्थ॥ पुरुष
जन्ममात्रा स्त्रविद्यादान गद्य को पुंनेले पंडित
भयो॥ होमजगत्तया को पुंनेले धनाधे भयो॥ का
१३ नारसीमामृत्यु भयो॥ को पुंन्य ले वहुतराज्य को राजा भ
यो भनी श्री कृष्ण ले प्रजुनताई सुनाया॥ १४॥ प्रजुनो वा
च॥ केन भाव भवे केन केरा पाये रा मृखिता॥ केन पाये

भवेत्तोलिकं थं क से जना ई नम ॥ अस्या ठं ॥ क्या पुं ते ह्य स
१५ म स सं ग प्र ति ग य ॥ सरु का पा प ले मु र्वि भ यो ॥ १६ ॥
सी व त् त्व न ज्ञा न मी किं ॥ सी थी रु द्र वो या ।। ।। ।। ।। ।। ।। ।। ।।